वैदिक साहित्य में शाश्वत ज्ञान आधुनिक अनुप्रयोग

रितु रानी
शोध छात्रा
दर्शन विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार।

प्रस्तावना - याज्ञवल्क्य स्मृति में ज्ञान के चौदह सूत्रों का उल्लेख है। वे हैं -वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद), वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष), पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र। मुण्डकोपनिषद् में एक बहुत ही रोचकरूप में विद्या को दो प्रकारों में विभाजित किया है परा और अपरा। ज्ञान अपरा विद्या के अन्तर्गत आता है। वेद शास्त्र हैं और वेदांग वैदिक-सहायक विज्ञान हैं जो ध्वन्यात्मक/स्वर विज्ञान से सम्बन्धित है। वैदिक शास्त्र चार भागों मे विभाजित हैं- संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद। प्रत्येक शाखा के लिए विशेष वैदिक व्याकरण का नियम हैं जिन्हें प्रातिशाख्य कहते हैं और उच्चारण से सम्बन्धित नियमों को शिक्षा के रूप में जानते हैं। मीमांसा सूत्र वैदिक पाठ की व्याख्या के लिए नियमों का वर्णन करता हैं, न्याय और वैशेषिक सूत्र (तर्क, अस्तित्वता एवं ज्ञान मीमांसीय विषय सम्बन्धित), पुराण वेदों के संदेशों और शिक्षाओं का वर्णन करते है, धर्म सूत्र सार्वभौमिक सद्भाव के लिए आचार संहिता का वर्णन करता है। वेद मानवीय सभ्यता के अभिन्न ज्ञान-विज्ञान, परम्परा और संस्कृति का स्रोत है। यह प्राचीनकाल से विद्यमान लौकिक ज्ञान के आसुत ज्ञान का मौखिक संकलन है। इनका परिचय न केवल शास्त्र से है अपितु भारतीय संस्कृति और मानव सभ्यता के प्रमुख स्रोत के रूप में भी जाना जाता है। वेद' शब्दका अर्थ 'ज्ञान' है। यह शब्द संस्कृत के मूल 'विद्' धातु से घञ् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है 'जानना'। यह किसी एक विशेष साहित्यिक कार्य का उल्लेख नहीं करता है, अपितु साहित्य के एक विशाल कोष को दर्शाता है, जो अनेकानेक शताब्दियों में अभिवृत हुआ और जिसे मौखिक रूप से एक पीढी से दूसरे पीढ़ी को हस्तान्तरित किया गया। वेद को 'श्रुति' कहते हैं अर्थात् 'श्रवण' करना होता है जहाँ कालोपरान्त प्रकट ऋषि रचित स्मृति वेदो का पुनः स्मरण करते हैं। यह मुख्य रूप से मौखिक-कर्ण विधि का उल्लेख करता है जो इसके लिए प्रयोग किया जाता था (और है)।

कूट शब्द – वेद , विज्ञान , शिल्पशास्त्र, कृषि विज्ञान ,आयुर्वेद, चिकित्सा।

वेद शब्द संस्कृत के विद् धातु से निर्मित है, जिसका अर्थ है जानना, इसलिए वेद का शब्दिक अर्थ है 'ज्ञान'। इसी धातु से 'विदित' (जाना हुआ), 'विद्या' (ज्ञान), 'विद्वान' (ज्ञानी) जैसे शब्द प्राप्त हुए हैं। इन्हें देववाणी के रूप में स्वीकार किया गया है। इसलिए ये 'श्रुति' कहलाते हैं। 'श्रु' धातु से 'श्रुति' शब्द उत्पन्न हुआ है। 'श्रु' यानी सुनना। कहा जाता है कि इसके मन्त्रों को ईश्वर (ब्रह्म) ने प्राचीन तपस्वियों को अप्रत्यक्ष रूप से सुनाया था जब वे गहरी तपस्या में लीन थे। सर्वप्रथम ईश्वर ने चार ऋषियों को इसका ज्ञान दिया: अग्नि, वायु, अंगिरा और आदित्य।

भारतीय पारम्परिक विचारों के अनुसार 'वेद' को प्रकट ग्रन्थ, स्व-साक्ष्य और आत्म प्रमाणित माना जाता है। यह किसी भी मानव द्वारा रचित नहीं है। वैदिक मन्त्र (सूक्त) या छन्द (मन्त्र) केवल ऋषियों (ऋषियों) द्वारा देखे और बोले गए हैं। ये द्रष्टा (ऋषि) न तो मंत्रों के लेखक हैं और न ही वे मंत्रों की विषय-वस्तु के लिए उत्तरदायी हैं। वेद के सबसे प्राचीन व्याख्याकार यास्क हैं । तत्पश्चात् मौखिक रूप से इस अनुभूत ज्ञान को वंशजों को सौंप दिया। महान वैदिक टीकाकार सायण ने वेद की एक परिभाषा दी है

'इष्टप्राप्ति- अनिष्ट परिहारयोः यो लौकिकम्-उपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः'।

इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट का परिहार जिस ग्रन्थ के माध्यम से होता है वह वेद है। यह परिभाषा वेद के उद्देश्य को प्रस्तुत करती है। एक अन्य परिभाषा, ऋषि आपस्तम्भ के अनुसारवेद मंत्रों और ब्राम्हणों का सम्मिलित रूप है।

मंत्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम् ॥

यह परिभाषा 'वेद' के रूप का वर्णन करती है क्योंकि इसे मुख्य रूप से इन दो विशिष्ट भागों में विभाजित किया जा सकता है- मंत्र और ब्राह्मण। जिसके अनुसार, मंत्र भाग वेद का मुख्य भाग है और वेद के मंत्रहीन भाग ब्राम्हण भाग के अन्तर्गत आता है। यहां यह जानना रोचक है कि प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वेद की कई प्राचीन परिभाषाएं, इसके महत्त्व, रूप या सामग्री को दर्शाती हैं। आम तौर पर 'वेद' शब्द बोलना उच्चतम, पवित्र, शाश्वत और दिव्य ज्ञान

के साथ-साथ उस ज्ञान को ग्रहण करने वाले ग्रंथों को दर्शाता है। वेदों को परम सत्य माना गया है। उनमें लौकिक अलौकिक सभी विषयों का ज्ञान भरा पड़ा है। प्रत्येक वेद के चार अंग है। वे हैं वेदसंहिता, ब्राह्मण-ग्रन्थ, आरण्यक तथा उपनिषद्।

वेदसंहिता: वेदों के मन्त्र भाग को संहिता कहा जाता है। वेद के मन्त्रों में सुंदरता भरी पड़ी है। वैदिक ऋषि जब स्वर के साथ वेद मंत्रों का पाठ करते हैं, तो चित्त प्रसन्न हो उठता है। जो भी सस्वर वेदपाठ सुनता है, मुग्ध हो उठता है। ब्राह्मण-ग्रन्थ: ब्राह्मण ग्रंथों में मुख्य रूप से यज्ञों की चर्चा है। वेदों के मंत्रों की व्याख्या है। यज्ञों के विधान और विज्ञान का विस्तार से वर्णन है। मुख्य ब्राह्मण 3 हैं :

ऐतरेय

तैत्तिरीय

शतपथ

आरण्यक: वन को संस्कृत में कहते हैं 'अरण्य'। अरण्य में उत्पन्न हुए ग्रंथों का नाम पड़ गया 'आरण्यक'। मुख्य आरण्यक पाँच हैं :

ऐतरेय

शांखायन

बृहदारण्यक

तैत्तिरीय

तवलकार।

उपनिषद: उपनिषद को वेद का शीर्ष भाग कहा गया है और यही वेदों का अंतिम सर्वश्रेष्ठ भाग होने के कारण वेदांत कहलाए। इनमें ईश्वर, सृष्टि और आत्मा के संबंध में गहन दार्शनिक और वैज्ञानिक वर्णन मिलता है। उपनिषदों की संख्या 1180 मानी गई है, लेकिन वर्तमान में 108 उपनिषद ही उपलब्ध हैं। मुख्य उपनिषद हैं: ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छांदोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वर। असंख्य वेद-शाखाएँ, ब्राह्मण-ग्रन्थ, आरण्यक और उपनिषद विलुप्त हो चुके हैं। वर्तमान में ऋग्वेद के दस, कृष्ण यजुर्वेद के बत्तीस, सामवेद के सोलह, अथर्ववेद के इकतीस उपनिषद उपलब्ध माने गए हैं।

वेद के चार विभाग है

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग-स्थिति, यजु-रूपांतरण, साम-गतिशील और अथर्व-जड़। ऋक को धर्म, यजुः को मोक्ष, साम को काम, अथर्व को अर्थ भी कहा जाता है। इन्ही के आधार पर धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र और मोक्षशास्त्र की रचना हुई।

ऋग्वेद: ऋक अर्थात् स्थिति और ज्ञान। सबसे प्राचीन तथा प्रथम वेद जिसमें मन्त्रों की संख्या 10462, मंडल की संख्या 10 तथा सूक्त की संख्या 1028 है। ऐसा भी माना जाता है कि इस वेद में सभी मंत्रों के अक्षरों की कुल संख्या ४३२००० है। इसका मूल विषय ज्ञान है। ऋग्वेद की ऋचाओं में देवताओं की प्रार्थना, स्तुतियाँ और देवलोक में उनकी स्थिति का वर्णन है। इसमें 5 शाखाएँ हैं: शाकल्प, वास्कल, अश्वलायन, शांखायन, मंडूकायन। इसमें भौगोलिक स्थिति और देवताओं के आवाहन के मंत्रों के साथ बहुत कुछ है। ऋग्वेद की ऋचाओं में देवताओं की प्रार्थना, स्तुतियां और देवलोक में उनकी स्थिति का वर्णन है। इसमें जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा, सौर चिकित्सा, मानस चिकित्सा और हवन द्वारा चिकित्सा आदि की भी जानकारी मिलती है। ऋग्वेद के दसवें मंडल में औषधि सूक्त यानी दवाओं का जिक्र मिलता है। इसमें औषधियों की संख्या 125 के लगभग बताई गई है, जो कि 107 स्थानों पर पाई जाती है। औषधि में सोम का विशेष वर्णन है। ऋग्वेद में च्यवनऋषि को पुनः युवा करने की कथा भी मिलती है।

यजुर्वेद:- यजुर्वेद का अर्थ : यत् + जु = यजु। यत् का अर्थ होता है गतिशील तथा जु का अर्थ होता है आकाश। इसके अलावा कर्म। श्रेष्ठतम कर्म की प्रेरणा। इसमें कार्य (क्रिया) व यज्ञ (समर्पण) की प्रक्रिया के लिये 1975 मन्त्र और 40 अध्याय हैं। इस वेद में अधिकतर यज्ञ के मन्त्र हैं। यज्ञ के अलावा तत्वज्ञान का वर्णन है। यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं कृष्ण और शुक्ल।

कृष्ण: वैशम्पायन ऋषि का सम्बन्ध कृष्ण से है। कृष्ण की चार शाखाएं हैं।

शुक्ल: याज्ञवल्क्य ऋषि का सम्बन्ध शुक्ल से है। शुक्ल की दो शाखाएं हैं। इसमें 40 अध्याय हैं। यजुर्वेद के एक मंत्र में च्व्रीहिधान्यों का वर्णन प्राप्त होता है। इसके अलावा, दिव्य वैद्य और कृषि विज्ञान का भी विषय इसमें मौजूद है।

सामवेद:- साम का अर्थ रूपांतरण और संगीत। सौम्यता और उपासना। इस वेद में ऋग्वेद की ऋचाओं का संगीतमय रूप है। सामवेद गीतात्मक यानी गीत के रूप में है। इस वेद को संगीत शास्त्र का मूल माना जाता है। 1824 मंत्रों के इस वेद में 75 मंत्रों को छोड़कर शेष सब मंत्र ऋग्वेद से ही लिए गए हैं। इसमें सविता, अग्नि और इंद्र देवताओं के बारे में जिक्र मिलता है। इसमें मुख्य रूप से 3 शाखाएं हैं, 75 ऋचाएं हैं और विशेषकर संगीतशास्त्र का समावेश किया गया है।

अथर्ववेद:- थर्व का अर्थ है कंपन और अथर्व का अर्थ अकंपन। ज्ञान से श्रेष्ठ कम करते हुए जो परमात्मा की उपासना में लीन रहता है वही अकंप बुद्धि को प्राप्त होकर मोक्ष धारण करता है। इसमें गुण, धर्म, आरोग्य, एवं यज्ञ के लिये 5987 मन्त्र और 20 कांड हैं। इसमें भी ऋग्वेद की बहुत-सी ऋचाएँ हैं। इसमें रहस्यमय विद्या का वर्णन है।

वेद दुनिया के प्रथम धर्मग्रंथ है। इसी के आधार पर दुनिया के अन्य मजहबों की उत्पत्ति हुई जिन्होंने वेदों के ज्ञान को अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न भाषा में प्रचारित किया। वेद ईश्वर द्वारा ऋषियों को सुनाए गए ज्ञान पर आधारित है इसीलिए इसे श्रुति कहा गया है। वेदों को अपौरुषेय (जिसे किसी पुरुष के द्वारा न किया जा सकता हो), (अर्थात् ईश्वर कृत) माना जाता है। यह ज्ञान विराटपुरुष से वा कारणब्रह्म से श्रुति परम्परा के माध्यम से सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी ने प्राप्त किया माना जाता है। यह भी मान्यता है कि परमात्मा ने सबसे पहले चार महर्षियों जिनके अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नाम थे; के आत्माओं में क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान दिया, उन महर्षियों ने फिर यह ज्ञान ब्रह्मा को दिया सामान्य भाषा में वेद का अर्थ होता है ज्ञान। वेद पुरातन ज्ञान विज्ञान का अथाह भंडार है। इसमें मानव की हर समस्या का समाधान है। वेदों में ब्रह्म (ईश्वर), देवता, ब्रह्मांड, ज्योतिष, गणित, रसायन, औषधि, प्रकृति, खगोल, भूगोल, धार्मिक नियम, इतिहास, रीति-रिवाज आदि लगभग सभी विषयों से संबंधित ज्ञान भरा पड़ा है।

शतपथ ब्राह्मण के श्लोक के अनुसार अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ने तपस्या की और ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को प्राप्त किया। प्रथम तीन वेदों को अग्नि, वायु, सूर्य (आदित्य), से जोड़ा जाता है और संभवत: अथर्ववेद को अंगिरा से उत्पन्न माना जाता है। एक ग्रंथ के अनुसार ब्रह्माजी के चारों मुख से वेदों की उत्पत्ति हुई।... वेद सबसे प्राचीनतम पुस्तक हैं इसलिए किसी व्यक्ति या स्थान का नाम वेदों पर से रखा जाना स्वाभाविक है। जैसे आज भी रामायण, महाभारत इत्यादि में आए शब्दों से मनुष्यों और स्थान आदि का नामकरण किया जाता है।

वेदों को समझना प्राचीन काल से ही पहले भारतीय और बाद में संपूर्ण विश्व भर में एक वार्ता का विषय रहा है। इसको पढ़ाने के लिए छः अंगों – शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द और ज्योतिष के अध्ययन और उपांगों जिनमें छः शास्त्र – पूर्वमीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदांत व दस उपनिषद् – इशावास्य, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, मांडुक्य, ऐतरेय, तैतिरेय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक आते हैं। प्राचीन समय में इनको पढ़ने के बाद वेदों को पढ़ा जाता था। प्राचीन काल के वशिष्ठ, शक्ति, पराशर, वेदव्यास, जैमिनी, याज्ञवल्क्य, कात्यायन इत्यादि ऋषियों को वेदों के अच्छे ज्ञाता माना जाता है। मध्यकाल में रचित व्याख्याओं में सायण का रचा चतुर्वेदभाष्य माधवीय वेदार्थदीपिका बहुत मान्य हैं। यूरोप के विद्वानों का वेदों के बारे में मत हिन्द-आर्य जाति के इतिहास की जिज्ञासा से प्रेरित रही है। अतः वे इसमें लोगों, जगहों, पहाड़ों, नदियों के नाम ढूँढते रहते हैं – लेकिन ये भारतीय परंपरा और गुरुओं की शिक्षाओं से मेल नहीं खाता। अठारहवीं सदी उपरांत यूरोपियनों के वेदों और उपनिषदों में रूचि आने के बाद भी इनके अर्थों पर कई विद्वानों में असहमति बनी रही है। वेदों में अनेक वैज्ञानिक विश्लेषण प्राप्त होते हैं।

विज्ञानों में सबसे प्राचीन, वैदिक विज्ञान की प्राचीन परंपरा के साथ जोड़ती है। कई हज़ार वर्ष पूर्व, हिमालय के ऋषियों ने चेतना के मौन स्तरों के अन्वेषण के माध्यम से एक एकीकृत क्षेत्र की खोज की जहाँ प्रकृति के सभी नियम एक साथ, संपूर्णता की अवस्था में पाए जाते हैं। प्रकृति की इस एकता को चेतना की एक आत्म-संदर्भित अवस्था के रूप में प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया गया जो असीम, सर्वव्यापी, अपरिवर्तनीय और सभी विद्यमान वस्तुओं का आत्मनिर्भर स्रोत है। उन्होंने उस आत्म-अंतःक्रियाशील गतिकी का अनुभव किया और उसे अभिव्यक्त किया जिसके माध्यम से यह एकीकृत क्षेत्र क्रमिक रूप से प्रकृति के सभी नियमों की विविधता को जन्म देता है। वह अनुभव प्राचीन वैदिक साहित्य में अभिव्यक्त होता है। महर्षि ने इस प्राचीन विज्ञान के ज्ञान को प्रकाश में लाया है और इसे आधुनिक विज्ञानों के साथ इस प्रकार एकीकृत किया है कि वैदिक विज्ञान और आधुनिक विज्ञान अब एक ही वास्तविकता - प्रकृति के सभी नियमों के एकीकृत क्षेत्र - का ज्ञान प्राप्त करने की पूरक विधियों के रूप में देखे जाते हैं। इस प्राचीन विज्ञान का जो ज्ञान महर्षि ने प्रकाश में लाया है, उसे महर्षि का वैदिक विज्ञान कहा जाता है। महर्षि के वैदिक विज्ञान को, सर्वप्रथम, ज्ञान प्राप्ति की एक विश्वसनीय विधि के रूप में, शब्द के पूर्णतम अर्थ में एक विज्ञान के रूप में समझा जाना चाहिए। यह ज्ञान के एकमात्र आधार के रूप में अनुभव पर निर्भर करता है, न कि केवल इंद्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव पर, बल्कि उस अनुभव पर जो तब प्राप्त होता है जब मन पूर्णतः शांत होकर एकीकृत क्षेत्र के साथ एकाकार हो जाता है। आधुनिक विज्ञानों के संदर्भ में परीक्षित यह विधि, प्रकृति के सभी नियमों के एकीकृत क्षेत्र की खोज का एक प्रभावी साधन सिद्ध होती है। इस विधि के आधार पर एकीकृत क्षेत्र का पूर्ण ज्ञान संभव हो पाता है। चेतना के अन्वेषण के माध्यम से प्रत्यक्ष अनुभव के स्तर पर व्यक्तिपरक रूप से और आधुनिक विज्ञान की अन्वेषणात्मक विधियों के माध्यम से वस्तुनिष्ठ रूप से एकीकृत क्षेत्र को जानना संभव है। वैदिक विज्ञान चेतना, या ज्ञाता का पूर्ण ज्ञान, ज्ञात वस्तु का पूर्ण ज्ञान और जानने की प्रक्रिया का पूर्ण ज्ञान प्रदान करता है। एकीकृत क्षेत्र को जानने में, तीनों - ज्ञाता, ज्ञात और जानने की प्रक्रिया - ज्ञान की एक एकीकृत अवस्था में एकाकार हो जाते हैं जिसमें तीनों एक ही होते हैं। महर्षि ने एकीकृत क्षेत्र के व्यवस्थित अन्वेषण हेतु एक तकनीक विकसित और उपलब्ध कराई है। यह तकनीक एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति एकीकृत क्षेत्र तक पहुँच सकता है और चेतना की सरलतम एवं एकीकृत अवस्था के अनुभव के माध्यम से उसका अन्वेषण कर सकता है। जैसे-जैसे अनुभव का यह क्षेत्र सर्वसुलभ होता जाता है, एकीकृत क्षेत्र एक प्रत्यक्ष

अनुभव के रूप में उपलब्ध होता जाता है जो सार्वभौमिक ज्ञान का आधार बनता है। एकीकृत क्षेत्र तक पहुँच प्राप्त करने की तकनीक को एकीकृत क्षेत्र की महर्षि तकनीक कहा जाता है, और इस अनुभव पर आधारित विज्ञान, जो आधुनिक विज्ञान और वैदिक विज्ञान को ज्ञान के एक एकीकृत निकाय में जोड़ता है, सृजनात्मक बुद्धि का विज्ञान कहलाता है।

महर्षि एकीकृत क्षेत्र के ज्ञान और तकनीक को जीवन के व्यावहारिक लाभ के लिए लागू करने के लिए गहन रूप से प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने इस ज्ञान को स्वास्थ्य, शिक्षा, पुनर्वास और विश्व शांति सहित मानवीय सरोकारों के प्रत्येक प्रमुख क्षेत्र में लागू करने के लिए कार्यक्रम विकसित किए हैं। एकीकृत क्षेत्र की महर्षि तकनीक के इन अनुप्रयोगों ने इसे अनुभवजन्य सत्यापन के लिए खुला छोड़ दिया है और मानव जाति के लिए इसके व्यावहारिक लाभ को प्रदर्शित किया है। सैकड़ों वैज्ञानिक अध्ययनों ने इसकी उपयोगिता को पहले ही स्थापित कर दिया है। इन परिणामों से यह स्पष्ट है कि एकीकृत क्षेत्र की महर्षि प्रौद्योगिकी वर्तमान अनुभवजन्य विज्ञान पर आधारित प्रौद्योगिकियों की तुलना में कहीं अधिक लाभदायक है; यह युद्ध, आतंकवाद, अपराध, अस्वस्थता और सभी प्रकार के मानवीय कष्टों को कम करने और यहां तक कि समाप्त करने का वादा करती है।

चेतना की आत्म-अंतःक्रियाशील गतिशीलता-

जब कोई व्यक्ति एकीकृत क्षेत्र की महर्षि तकनीक के अभ्यास के माध्यम से पूरी तरह से स्थिर और स्थिर रहते हुए जागृत रहने की क्षमता प्राप्त कर लेता है, तो वह शुद्ध चेतना की एक पूरी तरह से सरल, एकीकृत, अविभाज्य, आत्म-संदर्भित स्थिति का अनुभव करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है, जिसे वैदिक साहित्य में संहिता कहा जाता है, जिसमें ज्ञाता, ज्ञेय और जानने की प्रक्रिया एक समान हैं। चेतना केवल स्वयं के प्रति जागृत है, अपने स्वयं के स्वरूप को सरल, एकीकृत शुद्ध चेतना के रूप में जानती है। फिर भी स्वयं को जानने में, शुद्ध चेतना की स्थिति स्वयं के बीच ज्ञाता, स्वयं के रूप में ज्ञाता, और स्वयं के रूप में जानने की प्रक्रिया के बीच बौद्धिक रूप से कल्पित अंतर बनाती है। वैदिक साहित्य में, यह ऋषि (ज्ञाता), देवता (जानने की प्रक्रिया), और छंद (ज्ञान की वस्तु) के बीच के अंतर में परिलक्षित होता है। महर्षि के अनुसार, शुद्ध चेतना की एकीकृत अवस्था में इन तीन बौद्धिक रूप से कल्पित मूल्यों की विभिन्न अंतःक्रियाओं और परिवर्तनों से, ज्ञान के सभी विविध रूप, प्रकृति के सभी विविध नियम, और अंततः भौतिक प्रकृति में सभी विविधताएं क्रमिक रूप से उभरती हैं।

चेतना के इस पूर्णतः स्थिर और स्थिर स्तर पर जागृत चेतन मन, उस क्रियाविधि को देख सकता है जिसके द्वारा शुद्ध चेतना की एकता से अनेकता का विविधीकरण होता है। ऋषि, देवता और छंदों का स्वयं को संहिता में रूपांतरित करना, संहिता का स्वयं को ऋषि, देवता और छंदों में रूपांतरित करना, और ऋषि, देवता और छंदों का स्वयं को एक-दूसरे में रूपांतरित करना, वह क्रियाविधि है जिसके द्वारा शुद्ध चेतना की एकता प्राकृतिक नियमों की विविधता को जन्म देती है। ये क्रियाविधि वैदिक साहित्य के क्रमिक प्रकटीकरण में अभिव्यक्त होती हैं। ये स्वयं को जानने वाली चेतना की आत्म-अंतःक्रियाशील गतिकी हैं, जो महर्षि के अनुसार, क्रमिक रूप से प्रकृति में सभी विविधताओं को जन्म देती हैं। अथर्ववेद और अन्य वैदिक ग्रंथों में जड़ी-बूटियों और औषधियों से संबंधित ज्ञान का विस्तृत वर्णन मिलता है, जो आयुर्वेद का आधार है। सुश्रुत संहिता और चरक संहिता जैसे ग्रंथ इसी वैदिक चिकित्सा विज्ञान पर आधारित हैं। वेदों में खगोलशास्त्र और गणित का भी उल्लेख मिलता है। "शुल्ब सूत्र" जैसे वैदिक ग्रंथों में ज्यामिति और गणना की विधियाँ दी गई हैं, जो आधुनिक गणित के विकास का आधार हैं। वेदों में ग्रहों, नक्षत्रों, और ब्रह्मांड की स्थिति का भी वैज्ञानिक वर्णन है।

वेदों में कृषि और पर्यावरण के प्रति जो सम्मान दिखाया गया है, वह आज के पर्यावरणीय संकटों के समाधान के लिए महत्वपूर्ण है। "वसुधैव कुटुम्बकम" का सिद्धांत वैश्विक सहयोग और एकता का संदेश देता है, जो पर्यावरणीय स्थिरता के लिए आवश्यक है।

वेदों का ज्ञान आधुनिक समाज के लिए भी प्रासंगिक है। यह न केवल आध्यात्मिक जागरूकता को बढ़ावा देता है, बल्कि नैतिकता, सत्य, और अहिंसा के सिद्धांतों के माध्यम से समाज को दिशा भी देता है। वेदों का पर्यावरण और प्रकृति के प्रति सम्मान का दृष्टिकोण भी आज के युग में महत्वपूर्ण है।

प्राचीन कृषि ज्ञान:-

ऋग्वेद और अथर्ववेद सहित वैदिक ग्रंथ, कृषि की प्रथाओं और सिद्धांतों पर समृद्ध अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। ये ग्रंथ मानव जीवन, प्रकृति और कृषि के बीच गहरे संबंध को स्वीकार करते हैं और सभी जीवों के बीच सामंजस्य के महत्व पर बल देते हैं। प्राचीन भारतीय सभ्यता ने इष्टतम कृषि उत्पादकता के लिए संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र बनाए रखने में जैव विविधता, फसल चक्र और मृदा उर्वरता के महत्व को पहचाना था। कृषि के बारे में वैदिक ज्ञान केवल फसल उगाने तक ही सीमित नहीं है; यह मानवता और पर्यावरण के कल्याण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का प्रतीक है। वैदिक साहित्य एक ऐसी कृषि की कल्पना करता है जो नैतिक सिद्धांतों पर आधारित हो, और स्थायी प्रथाओं, प्रकृति के प्रति सम्मान और सामाजिक उत्तरदायित्व के महत्व पर बल देती हो। यह दृष्टिकोण "धर्म" की अवधारणा के अनुरूप है, जहाँ कृषि समुदाय और पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करने का एक साधन बन जाती है।

आधुनिक समय में वैदिक ज्ञान का प्रयोग-

आज की दुनिया में, जहाँ जलवायु परिवर्तन, मृदा क्षरण और भोजन तक असमान पहुँच जैसी समस्याएँ बनी हुई हैं, वैदिक कृषि का ज्ञान अत्यंत प्रासंगिक है। जैविक खेती, जल संरक्षण और सतत प्रथाओं पर ज़ोर, कृषि स्थायित्व प्राप्त करने के समकालीन प्रयासों के अनुरूप है। वैदिक अंतर्दृष्टि को आधुनिक तकनीक और अनुसंधान के साथ एकीकृत करके, समाज वर्तमान चुनौतियों से निपटने के लिए नवीन समाधान विकसित कर सकते हैं।

कृषि संबंधी वैदिक ज्ञान, स्थायी और सामंजस्यपूर्ण कृषि पद्धतियों के लिए एक शाश्वत मार्गदर्शक प्रदान करता है। सभी के लिए भोजन सुनिश्चित करने और मानवता एवं प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखने का इसका दृष्टिकोण वर्तमान और भविष्य के लिए बहुमूल्य शिक्षाएँ प्रदान करता है। इस प्राचीन ज्ञान का उपयोग करके और इसे समकालीन नवाचारों के साथ जोड़कर, मानवता एक अधिक समतापूर्ण, लचीली और टिकाऊ कृषि प्रणाली की ओर अग्रसर हो सकती है जो सभी को भोजन उपलब्ध कराने के अपने वादे को पूरा करती है।

पश्चिमी जगत ने विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में ज्ञान की शक्तिशाली बाह्य प्रणालियाँ विकसित करने में निश्चित रूप से बहुत प्रगति की है, लेकिन मन की आंतरिक शक्तियों और उनसे संपर्क कैसे किया जाए, इस बारे में अभी भी अनभिज्ञ और अनभिज्ञ है । वैदिक ज्ञान प्रणालियाँ हमें जीवन, मन और बुद्धि की गहन ऊर्जाओं का आंतरिक ज्ञान प्रदान करती हैं जो ब्रह्मांड में व्याप्त हैं, और हमें अपने दैनिक जीवन में इन तक पहुँचने में सक्षम बनाती हैं। वैदिक विज्ञान का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। आधुनिक विज्ञान और तकनीकी विकास व्यक्ति में अपने अंतर्मन में झाँकने की आवश्यकता को भी जन्म देगा। आज का वातावरण प्रतिस्पर्धात्मक होता जा रहा है और हर कोई ऐसे गुण प्राप्त करना चाहता है जो उसे अपने साथियों से आगे ले जाएँ। इस परिदृश्य में, वैदिक विज्ञान की शिक्षा एक सही विकल्प हो सकती है, क्योंकि यह हमारे शास्त्रों की सर्वोत्तम शिक्षा को आज की तकनीकी विशेषज्ञता के साथ मिश्रित करती है, जिससे छात्रों को आधुनिक दुनिया की किसी भी चुनौती का सामना करने का अवसर मिलता है।

निष्कर्ष -

वैदिक विज्ञान और शास्त्र, शैक्षिक विज्ञानों की जीवंत धारा में गहराई से निहित हैं। वेद, उपनिषद, आरण्यक, संहिताएँ, वेदांग आदि वैदिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञानों में इसके वास्तविक अनुप्रयोग का संग्रह हैं। वेदों में रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, खगोल विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, अभियांत्रिकी, कंप्यूटर विज्ञान और ब्रह्मांड विज्ञान का संचय वर्णित है। श्रीमद् भगवद् गीता विश्व के प्रति शैक्षिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। आधुनिकीकरण वह परिवर्तन है जो वैदिक विज्ञान की घटनाओं को आधुनिक विज्ञान में लाता है। विज्ञान की आधुनिक अवधारणाएँ जैसे खगोल विज्ञान में सौर ऊर्जा, ग्रहों की गति, भौतिक विज्ञान में प्रकाश की गति, पदार्थ की उत्पत्ति, इंद्रधनुष, अभियांत्रिकी में मशीनरी, वैमानिकी में विमानों की सुरक्षा, रसायन विज्ञान में ज्वाला परीक्षण, गर्म करने पर क्षरण और क्षति, लवण, धातु विज्ञान में कोष्ठि यंत्र, चिकित्सा विज्ञान में नाक की प्लास्टिक सर्जरी, टेस्ट ट्यूब बेबी, जीव विज्ञान में परासरण, कृषि विज्ञान में बीजरहित फल-सब्जियों आदि का वर्णन वैदिक शास्त्रों में मिलता है। इस प्रकार की अवधारणाओं को आज के विज्ञान पाठ्यक्रम में भारतीय वैदिक दृष्टि से शामिल किया जाना चाहिए। आधुनिक समय में नासा भी खगोलीय अनुसंधानों के नए आविष्कारों में वैदिक विज्ञान और वैदिक गणित का उपयोग कर रहा है। वैदिक परंपरा के ऋषियों ने मानव मन की उस क्षमता का वर्णन किया है जिससे वह शुद्ध बुद्धि के सार्वभौमिक और असीम क्षेत्र के साथ सचेतन रूप से तादात्म्य स्थापित कर सकता है, जो प्राकृतिक नियमों का आधार है, और उन्होंने उस आत्म-अंतःक्रियाशील गतिकी का चित्रण किया जिसके द्वारा यह प्रकृति में सभी विविधताओं को जन्म देती है। उन्होंने प्रकृति के सभी नियमों के एकीकृत क्षेत्र की पहचान एक आत्मनिर्भर, आत्म-अंतःक्रियाशील और असीम रूप से गतिशील चेतना के क्षेत्र के रूप में की।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- Vedas & Upanishads: Greatest Spiritual Wisdom for Tough Times by Pranay प्रकाशक -Prakash Books India Pvt Ltd, 113A, Ansari Road, Daryaganj,
- वैदिक सूक्त एवं संहिता संग्रह by Sandeep Unayal. Publisher Rudra Publications
- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति. By Kapildev Dwivedi. Publisher. Vaidik Pustakaly
- History, Geography and Science of Vedic India। By. Arun Kumar Upadhyaya Publisher Pratibha Prakashan; Latest edition (31 May 2025)
- ऋषि से राष्ट्रऋषि तक : ऋत, अदृष्ट, अपूर्व और एकात्म मानव दर्शन की तात्विक यात्रा। By. डॉ. दिवाकर कुमार कश्यप
- वेद और वैदिक काल लेखक: गुरुदत्त प्रकाशन – हिन्दी साहित्य सदन
- वेद और निरुक्त लेखक : ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु प्रकाशन – रामलाल कपूर ट्रस्ट
- Presentation of Vedic Literature Science in Vedas By Kapildev Dwivedi Publisher Vaidik Pustakaly